राज
कॉमिक्स विशेषांक
डाकटर
वायरस

WE PROMISE [...] COMICS
YOU PROMISE

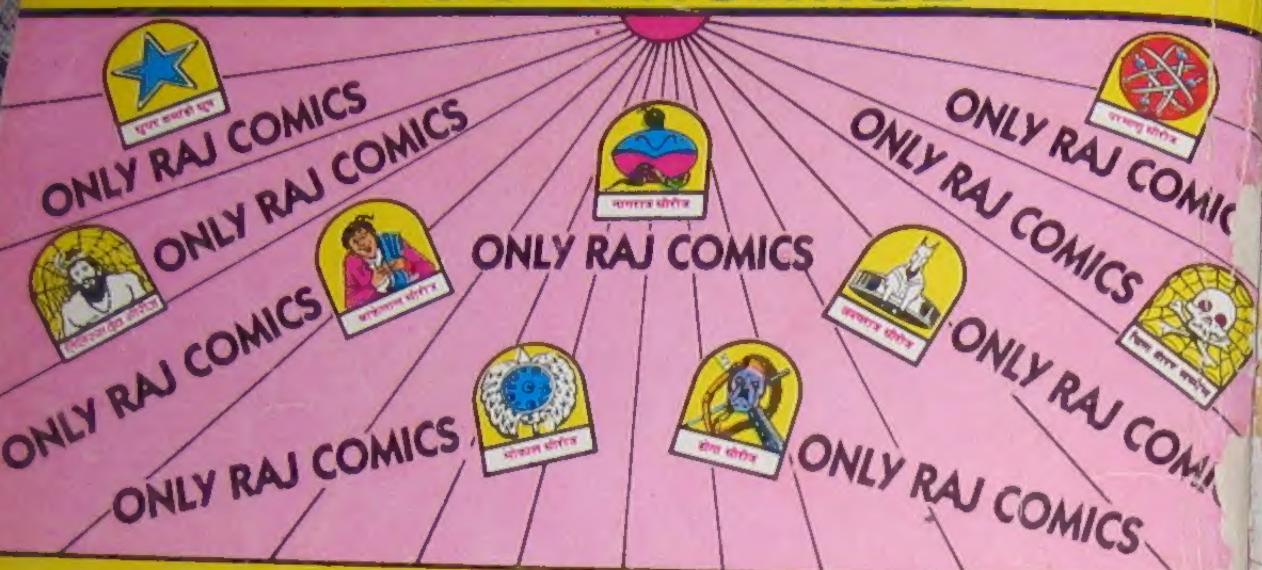

ONLY RAJ COMICS

इसी सैट के कॉमिक्स

- डाक्टर वायरस (सुपर कमांडो ध्रुव) (विशेषांक)
  इस कॉमिक्स के साथ सुपर कमांडो ध्रुव का एक मैग्नेट स्टीकर मुफ्त
- मैं हूं डोगा (डोगा)
  इस कॉमिक्स के साथ डोगा का एक आकर्षक स्टीकर मुफ्त
- इच्छाधारी हत्यारा (अश्वराज)
  इस कॉमिक्स के साथ अश्वराज का एक आकर्षक स्टीकर मुफ्त
- बिजलिका (गोजो)
- डायनामाइट (परमाणु)
- खोपड़ी का निशान (थ्रिल हॉरर सस्पैंस)
- शुक्राल और शलाका (शुक्राल)
- त्रिकाल और भैरवी

आगामी सैट के कॉमिक्स

- नागराज और मिस्टर 420 (नागराज)
  इस कॉमिक्स के साथ नागराज का एक स्टीकर मुफ्त
- भोकाल की तलवार (भोकाल)
  इस विशेषांक के साथ भोकाल का एक मैग्नेट स्टीकर मुफ्त
- अदरक चाचा (डोगा)
  इस कॉमिक्स के साथ डोगा का एक स्टीकर मुफ्त
- बांकेलाल और चोर तिलिस्मी (बांकेलाल)
  इस कॉमिक्स के साथ बांकेलाल का एक स्टीकर मुफ्त
- आतंक की आग (तिलिस्मदेव)
- सदमा (थ्रिल हॉरर सस्पैंस)
- अन्धा युद्ध (शुक्राल)
- पहाड़ी बाबा

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन :
प्रकाशक : राजा पॉकेट बुक्स, 330/1, बुराड़ी, दिल्ली-110009

दिल्ली में वितरक :
नागराज नावल्टीज, 313, दरीबा कलां, दिल्ली-11006

कुल्लू की बर्फीली वादियों में से, एक सड़क सांप की तरह बलखाती हुई, बर्फ से ढकी गगनचुंबी चोटियों की तरफ बढ़ती है।
सेना के कब्जे
कई सैन्य चौ
पार
करती हुई -
प्त इमारत
पर आकर खत्म
हो जाती है।
यह इमारत वास्तव में एक अत्याधुनिक प्रयोगशाला है।
जिसमें 'डॉ॰ वर्गीस' जैसा प्रसिद्ध जीव वैज्ञानिक, एक अत्यंत गुप्त प्रयोग कर रहा है।
वेलकम, जनरल! तुम एकदम ठीक समय पर आए हो! मैं अपने प्रयोग के अंतिम चरण में ही था।
ओ माई गॉड! यह... यह कैसा पेड़ है, डॉक्टर?
यह मेरी दो साल की मेहनत का नतीजा है, जनरल
इस दुनिया में दो तरह की जिंदा प्रजातियां होती हैं; एक पशुओं की यानि हमारी, और दूसरी पौधों की।
यह 'पेड़' इन दोनों प्रजातियों का मिला-जुला रूप है।
इसकी आकृति पेड़ जैसी जरूर है, पर यह पशुओं की तरह चल फिर सकता है, और अपना खाना-पानी खुद ढूंढ सकता है।

और इसमें एक टैंक की सी शक्ति है।
कमाल है!
कर भी यकीन नहीं हो रहा है!
जरा सोचो, जनरल! इन वृक्षपशुओं की तैनाती से, हमारे देश की सीमाएं कितनी सुरक्षित हो जाएंगी!
और हमारे कई सैनिकों की बहुमूल्य जानें भी बचेंगी!
वाह! पर तुमने इसको तैयार कैसे किया है?
इस स्पेशल 'बीटा वायरस' से! कोई भी पौधा मेरे बीटा वायरस पर पलकर, वृक्षपशु बन सकता है!
पर इसको कंट्रोल कैसे किया जाएगा, डॉक्टर?
इसके तने-रूपी छाती के अंदर लगे, इस 'कंप्यूटर चिप्स' से। यह चिप्स आदेश को ग्रहण करता है, ...
... और वृक्षपशु उसी आदेश के अनुसार काम करता है!
वेरी गुड!
पर अब मैं यह देखना चाहता हूं, कि इस वायरस का मानवों पर क्या असर होता है?
चाहता तो मैं भी था!
पर इस प्रयोग के लिए आदमी कहां से आएगा?
उसके लिए तुम जो हो, डॉ॰ वर्गीस!
क्या मतलब है तुम्हारा, जनर..ल?...
डॉ॰ वायरस! तुम... तुम यहां पर?
हां, मूर्ख! असली जनरल इस वक्त मेरी जीप में बेहोश पड़ा है!
पर... पर, डॉ॰ वायरस...

☆ पढ़िए 'प्रतिशोध की ज्वाला'

हालांकि इस वक्त, बैंक में कर्मचारियों की संख्या काफी कम है, पर इस वक्त कोई भी हरकत दिखाने का अर्थ, इनकी जान से खेलना है।
मुझे सही मौके का इंतजार करना पड़ेगा।
ओहो! तो कमांडो ध्रुव भी यहां पर मौजूद हैं!
वेरी गुड, श्री! तुमने इसको तुरंत कब्जे में लेकर बहुत अच्छा किया।
पर मैं अभी भी कोई रिस्क लेना नहीं चाहता।
इन सबको 'स्ट्रांग रूम' में बंद कर दो!
सभी कर्मचारी, शायफलों के साए में, स्ट्रांग रूम के अंदर घुसने लगे।
मैं अपनी चाल जरा धीमी कर लूं!
स्ट्रांग रूम
ताकि इस भीड़ में सबसे आखिरी में ही रहूं!
अब सभी लोग 'स्ट्रांग रूम' के अंदर सुरक्षित हैं।
पर मेरा इस के अंदर जाने का कोई इरादा नहीं है!
मैनेजर साहब! स्ट्रांग रूम को अंदर से बंद कर लीजिए।

कुछ पलों तक, कोई लुटेरा कुछ नहीं कर सका।
गोलियां चलने पर, उनके अपने साथी की जान भी जा सकती थी।
और जब तक गोलियां चलाने का मौका आ पाता।...
...ध्रुव अपना स्थान छोड़ चुका था।
ओफ्! पता नहीं बैंकों में इतना बड़ा हॉल क्यों बनाते हैं।
कहीं छिपने तक की जगह नहीं है।
इन गोलियों से बचने के लिए किसी ढाल का इंतजाम करना पड़ेगा।
और उसके लिए यह कैश बॉक्स, एकदम उपयुक्त चीज है!
तड़ाक
कैश बॉक्स के मोटे स्टील से टकराकर, गोलियां इधर-उधर छितराने लगीं।
ठक

इससे पहले कि लुटेरे, अपनी पोजीशन बदलकर फायरिंग करते–
ध्रुव तेजी से उनकी तरफ बढ़ा।
तड़ तड़ तड़ तड़
और बंदूकों की नलियां, कैश बॉक्स में कैद हो गई।
फटाक
और ध्रुव के भीषण घूंसे, दोनों के जबड़ों से आ टकराए।
ताड़
टिशं
आखिरी डकैत समझ गया था, कि वह ध्रुव से अकेला नहीं निपट सकता।
हैलो! नंबर वन हियर, डॉ॰ वायरस!
यहां पर ध्रुव मौजूद है! हमको मदद चाहिए!
मेरा नाम मत ले, मूर्ख! 'मदद' तो बैंक के बाहर, गाड़ी में मौजूद है!
मैं उसको आदेश देता हूं!
आह!
चौथा लुटेरा भी, एक ही वार में धराशायी हो गया।

और ध्रुव ने लपककर फोन उठा लिया।
हैलो, पुलिस हैडक्वार्टर!... ध्रुव हियर!... मैं मेट्रो बैंक से बोल रहा हूं!... यस!... यहां पर डकैती का प्रयास किया गया था।
चार लुटेरे थे! चारों फिलहाल बेहोश पड़े हैं!... हां, बैंक के ऑटोमेटिक दरवाजे भी बंद हैं!...
अब मैं कर्मचारियों को स्ट्रांग रूम से बाहर निकालने जा...!
ध्रुव की आवाज, एक तेज कड़कड़ाहट में गुम हो गई।
बैंक के स्टील के दरवाजे, जमीन पर आ गिरे थे।
और उसमें से, बैंक के अंदर प्रविष्ट हो रही थी–
एक अजीबोगरीब और भयानक आकृति!
यह क्या चीज है? देखने में तो मनुष्य लगता है!
और नहीं भी!
पहला वार ध्रुव को ही करना था।
पर इस वार का कुछ असर होगा, इसका भरोसा ध्रुव को खुद भी नहीं था।
थड़क
और अगले ही पल- ध्रुव को अपना जबड़ा टूटता हुआ सा महसूस हुआ।
धड़ाक

☆ पानी साफ करने का वह यंत्र, जो 'अल्ट्रावायलेट किरणों द्वारा, पानी में मौजूद, कीटाणुओं को नष्ट करता है।

तो उसके चेहरे पर मानवीय खाल साफ नजर आ रही थी।
यह क्या? इसकी ठोढ़ी पर से लाल खाल कैसे गायब हो गई?
कुछ भी हो! अब यही जगह, मेरे हमले का निशाना होगी!
?
और एक भीषण वार से ही-
कड़ाम!
...उस प्राणी का शरीर जमीन पर आ गिरा।
डॉ॰ वायरस के साथ ध्रुव का टकराव शुरू हो चुका था।
अब इसको अस्पताल पहुंचाना पड़ेगा।
पिटाई भी मुझे ही करनी पड़ती है, और अस्पताल भी मुझे ही पहुंचाना पड़ता है!
और फिर-
यह आखिर चीज क्या है, डॉ॰ साहब?
मुझे तो कुछ भी समझ में नहीं आया।
सेंट्रो राजा अस्पताल

मुझे थोड़ा-थोड़ा समझ में आ रहा है, ध्रुव! मैंने अभी इसके खून की जांच की थी। उस जांच में मुझे एक रहस्यमय वायरस का पता चला है।
मुझे यकीन है कि इसकी इस हालत का कारण, वह वायरस ही है।
तुमसे लड़ते समय, 'एक्वा प्योर' से निकलती 'अल्ट्रावायलेट किरणों' ने, इसके जबड़े पर के वायरसों को नष्ट कर दिया होगा।
और उस स्थान से वायरसों के नष्ट होते ही, इसकी खाल फिर से मानवों जैसी हो गई होगी।
बात तो समझ में आती है! मैंने भी पढ़ा है कि अल्ट्रावायलेट यानि पराबैंगनी किरणें, कई प्रकार के जीवाणुओं और विषाणुओं को नष्ट कर देती हैं।
पर ऐसा कौन नीच हो सकता है, जो अच्छे-भले इंसान को ऐसी भयानक स्थिति में पहुंचा दे?
यह तो यही बता सकता है। पर इस वक्त यह 'कोमा' यानि गहरी बेहोशी में है!
हमको इसके होश में आने का इंतजार करना पड़ेगा।
और तब तक कुछ भी अनहोनी हो सकती है।
इस घटना से मुझे एक भयंकर खतरे की बू आ रही है!
खतरा, ध्रुव के अनुमान से कहीं ज्यादा भयानक था।
चेचकी पकड़ा गया?
यह क्या बक रहे हो? यह असंभव है!
उसको पकड़ा आखिर किसने?
ध्रुव ने!

मैं, यानि डॉ॰ वायरस, इस दुनिया का सबसे बुद्धिमान जीव-वैज्ञानिक हूं! मैंने अपनी लेबोरेट्री में कई तरह के जीवाणु और विषाणुओं को 'डेवलप' किया है!
और उन विषाणुओं के, संतुलित मात्रा के इंजेक्शन लगा-लगाकर मैंने अपने लिए एक शक्तिशाली और खतरनाक 'वायरल मैनों' की एक फौज तैयार कर ली है।
और मेरी उसी फौज के, एक भयानक वायरल मैन, 'चेचकी' को एक मामूली से छोकरे ने पकड़ लिया!!
और साथ ही साथ मेरा बैंक लूटने का प्लान भी बेकार हो गया!
मुझे ढेर सारा पैसा चाहिए! और तुरंत चाहिए! वर्ना मेरी सारी योजना ठप्प हो जाएगी! अभी मुझको अपनी लेबोरेट्री में बीटा वायरस का उत्पादन करने के लिए ढेर सारा रुपया चाहिए!
वर्गीस वाला बीटा वायरस, तो प्रयोग करने में ही खत्म हो चुका है!
और ऐन वक्त पर यह मूर्ख चेचकी, ध्रुव से पिट गया!
अगर चेचकी होश में आ गया, तो हमारे लिए समस्या खड़ी हो सकती है!
अब चेचकी को होश में नहीं आना चाहिए!
उसको खत्म कर दो!
और उसके बाद, ध्रुव को रास्ते से हटाने का तरीका सोचो!
पर डॉ॰ वायरस को यह पता नहीं था, कि नेशनल फॉरेस्ट जैसी सुनसान जगह पर बनी उसकी प्रयोगशाला को...
...एक जोड़ी सुर्ख आंखें, बड़े ध्यान से देख रही थीं।

और फिर - राजनगर हास्पिटल में -
उस प्राणी की क्या हालत है, डॉक्टर?
मैं दो घंटे पहले उसको देखने गया था, ध्रुव!
तब तक वह बेहोश था।
तुम जाकर एक चक्कर लगा आओ।
और इसी वक्त -
चेचकी के रूम के बाहर।
ये काम मुझे सबसे खराब लगता है, रामसिंह! बस, गधों की तरह पहरा देते रहो!
तेरा क्या ख्याल है?
बोलता क्यों नहीं, यार?
बत्तीस! ... वह प्राणी, चालीस नंबर में है। आगे वाले मोड़ से दाहिने!
और बेहोश चेचकी के कमरे में एक रोंगटे खड़े कर देने वाली आकृति घुस रही थी।
मोड़ से मुड़ते ही, ध्रुव को खतरे का सिग्नल सामने नजर आ गया।
कमरे के अंदर- एक लिजलिजा हाथ, चेचकी का ऑक्सीजन मास्क हटाकर, उसकी नाक और मुंह को अपनी गिरफ्त में ले चुका था।
और जब तक ध्रुव, कमरे के दरवाजे पर आता...
...चेचकी का शरीर और उसकी धड़कन, खामोश हो चुकी थी।

ओह! एक और भयंकर प्राणी! क्या नर्क का कोई दरवाजा खुला रह गया है?
पर यह जो कोई भी हो, इसने इस बेहोश प्राणी को खत्म कर दिया है! पर क्यों?
अब वह घृणित आकृति वापस दरवाजे की तरफ बढ़ रही थी।
कोढ़क के रास्ते से हट जा, छोकरे!
ध्रुव की बंधी मुट्ठी कोढ़क की तरफ लपकी।
और ध्रुव को अपना हाथ किसी मोटे गद्दे में धंसता हुआ सा महसूस हुआ।
घच
कोढ़क! नाम तो पट्ठे पर फिट बैठ रहा है। पर मैं इसको जाने नहीं दे सकता!
वर्ना फिर मुझे इस षड्यंत्र की जड़ तक कौन पहुंचाएगा?
तो तू कोढ़क से लड़ना चाहता है, लड़के?
ले! मैं तेरी इच्छा पूरी किए देता हूं।
ध्रुव की चकित आंखों के सामने, कोढ़क के हाथ ने रबर-बैंड की तरह लंबा होकर-
ध्रुव के शरीर को अपनी कुंडली में कैद कर लिया।
?

और एक झटके से, ध्रुव का शरीर, लट्टू की तरह घूमता हुआ, दरवाजे से बाहर आ गिरा।
सांयाय
यह तो, उस लाल राक्षस से भी ज्यादा खतरनाक जीव लग रहा है!
मुझे तो लगता है, कि इससे पहले मैं इसके जरिए इसके बॉस तक पहुंच सकूं,...
... यह मुझे अपने जरिए भगवान तक पहुंचा देगा!
इधर एक जिंदगी और मौत का संघर्ष चल रहा था।
धड़ाक
...और दूसरी तरफ, डॉ॰ वायरस की लेबोरेट्री में अट्टहास गूंज रहा था।
हा हा हा हा! बन गया! मैंने वर्गीस वाले बीटा वायरस को अपनी ही लैब में डेवलप कर लिया है!
पर मेरा बनाया वायरस, उससे कहीं अधिक असरदार है!
अब मुझे रोकने वाला दूर-दूर तक, कोई नहीं है! हा हा हा हा हा!
परंतु डॉ॰ वायरस को रोकने वाला दूर नहीं, बल्कि बहुत पास में था।
और वह था...

जो काफी देर से, डॉ० वायरस की हर हरकत पर नजर रखे हुए था।
शायद मेरे प्रश्न का उत्तर, यह वृक्ष ही मुझे दे दे।
और पेड में एक संदेश प्रेषित होने लगा।
और वे उसकी भाषा को नहीं समझ रहे हैं।

और बाहर-
वाह! वाह! मेरा 'ऑटोमेटिक एटैक सिस्टम' बिल्कुल सटीक काम कर रहा है! इसकी तो टेस्टिंग हो गई।
और शैतान ने एक ग्राहक को खुद-बखुद मेरे पास भेज दिया!
?
वनपुत्र की फैली आंखों के सामने, एक चमकती सुई, उसके शरीर की तरफ बढ रही थी।
और वह असहाय था।
और यह एक ही घूंसे में मुझे पूरे ब्रह्मांड के दर्शन करा दे रहा है।
पर तो, मेरे जोरदार से जोरदार वारों का भी कोई असर नहीं हो रहा है!

इलाज, रेडियो विकिरणों द्वारा किया जाता है।
...तो यह अपने असली रूप में आ जाएगा! और तब इसपर काबू पाना एक मामूली बात होगी।
ध्रुव के, अचानक और ताबड़तोड़ हमले से कोढ़क भौंचक्का रह गया।
धड़ाक
यानि विकिरणों के द्वारा अगर इसके शरीर के वायरसों को नष्ट कर दिया जाए,—
ताड़
ध्रुव को उसे ठीक जगह पर पटकने का मौका गया।
तड़ाम
और कोढ़क का शरीर, मशीन के अंदर आ घुसा।

मशीन के चालू होते ही अदृश्य विकिरणों की किरणें, कोढ़क के शरीर पर बरसने लगीं।
और कोढ़क का शरीर तड़फड़ाने लगा।
ईयाआ आऊ!
क्लिक
घर्रर्रर्र
रेडियो विकिरणों का असर हो रहा था।
पर तभी - तड़पते कोढ़क का हाथ, रबर की तरह खिंच कर लंबा होने लगा।
और मशीन को पावर पहुंचाने वाले, बिजली के तार टूट कर नीचे आ गिरे।
चटाक
मशीन एक झटके के साथ रुक गई।
तिड़
अगले ही पल कोढ़क का गदगदेदार शरीर, दब कर, बंधनों से बाहर फिसल आया।
?
कोढ़क ने अपना भागने का इरादा बदल दिया था।
धनाक
तड़ाक

अब उसका पूरा ध्यान, ध्रुव को अपने रास्ते से हटाने में, लग गया था।
और ध्रुव उसके, अमानवीय शिकंजे में असहाय था।
उसका मस्तिष्क धीरे-धीरे अंधेरे के गर्त में गिरने लगा।
ज़िंदगी और मौत में, सिर्फ एक सांस की दूरी रह गई थी।
छपाक
तभी – अस्पताल के बगल में बह रही नहर में, एक तेज हलचल ने कोढक का ध्यान अपनी तरफ खींच लिया।
कुछ समझ पाने से पहले ही, कोढ़क ने अपने लिजलिजे शरीर को हवा में उड़ता हुआ पाया।
धड़ाक
नहर से निकल कर, एक रहस्यमय आकृति, कोढक और ध्रुव की तरफ बढ़ रही थी।

कोढक, खुद भी, इस 'बर्फ मानव' के एकाएक आ जाने से चकित था।
पर इस वक्त वह किसी से भी लड़ने को तैयार था।
लेकिन उसको 'बर्फ मानव' की शक्तियों का कतई अंदाज नहीं था।
अमानवीय फुर्ती से बर्फ मानव ने कोढक के दोनो हाथों को पकड़ लिया।
और कोढक के पूरे शरीर में एक तेज ठंडी लहर दौड़ गई। उसका पूरा बदन पलक झपकते सर्द हो गया।
अपनी सारी शक्ति उसको खत्म होती सी महसूस हुई।
कुछ ही पलों में कोढक अपने होशोहवास खो चुका था।
और ध्रुव के होश वापस आ रहे थे।
ध्रुव ने बर्फमानव को अपनी तरफ मुडते हुए देखा।
बर्फ मानव पलभर के लिए ठिठका।
और फिर उसने नहर में छलांग लगा दी।

एक और अजीबोगरीब प्राणी।
यह आखिर था क्या? कोढक का दुश्मन? या फिर मेरा दुश्मन?
बर्फ मानव किसका आदमी था, यह तो किसी को भी मालूम नहीं था।
पर कोढक की मदद के लिए डॉ॰ वायरस का एक और आदमी, अस्पताल के बाहर मौजूद था।
और इस अफरा-तफरी मे किसी ने भी उसको अस्पताल से बाहर जाते नही देखा।
अपने अपनी पूरी जंगली शक्ति का इस्तेमाल किया।
उस आदमी की मंजिल थी...
जहां पर वनपुत्र एक भयंकर खतरे का सामना कर रहा था।
डॉ॰ वायरस पर एक

डॉ॰ वायरस क्रोध से पागल हो उठा।
ठहरो! गोली मत चलाना! इसके टुकड़े-टुकड़े तो मेरा पालतू वृक्षपशु करेगा।
इसी बहाने इसकी टेस्टिंग भी हो जाएगी!
वृक्षपशु, एटैक!
आदेश मिलते ही, वृक्षपशु के शाखारूपी हाथ, वनपुत्र के शरीर को दो विपरीत दिशाओं में खींचने लगे।
वृक्षपशु की शक्ति के सामने, वनपुत्र की ताकत मामूली थी।
परंतु इससे पहले, कि वनपुत्र के शरीर को, वृक्षपशु चीर डालता-
वनपुत्र के मुंह से एक अजीब सी चीख निकली-
वनपुत्र की एक ही पुकार पर-
जंगल के छोर पर लगा, युकिलिप्टस का एक पेड तेजी से नीचे झुका।
और अगले ही पल-डॉ॰ वायरस ने अपनी जिंदगी का सबसे आश्चर्यजनक दृश्य देखा।
और उसकी शाखाओं ने, वृक्षपशु के तने को कस कर जकड़ लिया।

एक तेज झटके से वृक्षपशु की जड़ें, जमीन से बाहर आ गईं।
जनपुत्र, वृक्षपशु के चंगुल से छूटकर दूर जा गिरा।
...और वृक्षपशु को अपनी असीमित ताकत दिखाने का मौका मिल गया।
कड़ाक
अब आश्चर्यचकित होने की बारी, जनपुत्र की थी।
वृक्षपशु आजाद हो गया था।
जमीन से बाहर आ जाने के बावजूद भी वृक्षपशु खड़ा हुआ था।
एक खूनी संघर्ष अभी बाकी था।
इसके विपरीत राजनगर अस्पताल में फिलहाल शांति थी।
तुम्हारा ख्याल एकदम सही था, ध्रुव।
पर इसके बाद भी, यूकालेप्टस की शाखाएं ने वृक्षपशु के 'शरीर' को नहीं छो

एक और जीवाणुओं का शिकार। अब मुझे याद आ रहा है, डॉक्टर!
उन बैंक लुटेरों में से एक लुटेरे ने, ट्रांसमीटर पर, अपने बॉस को, 'डॉ॰ वायरस' के नाम से संबोधित किया था।
उस समय मैंने इसपर ज्यादा ध्यान नहीं दिया था। पर अब मुझे यकीन हो गया है कि इन प्राणियों के बॉस का नाम डॉ॰ वायरस ही हो सकता है।
पर सवाल तो यह है कि उस तक पहुंचा कैसे जाएगा।
यह गोल कांटा मुझको, कोढ़क के पैर में धंसा हुआ मिला था। अगर इससे तुमको कोई सूत्र मिल सके तो...।
यह एक जंगली पेड़ का कांटा है। और राजनगर के पास सिर्फ एक ही जंगल है - नेशनल फॉरेस्ट! मुझे मेरे सवालों का जवाब वहीं से मिलेगा।
पर नेशनल फॉरेस्ट में, कोढक के हार की खबर, ध्रुव से काफी पहले पहुंच चुकी थी।
पर डॉ॰ वायरस की बात मुंह में ही रह गई।
क्योंकि उसी पल - लेबोरेट्री का एक हिस्सा धराशायी हो गया।

वृक्ष पशु ने एक और पेड़ को जड़ से उखाड़ दिया था।
लड़ाई का तरीका बदलने को मजबूर हो गया।
और वृक्षपशु के शरीर पर, चारों तरफ से घासें आ लिपटीं।

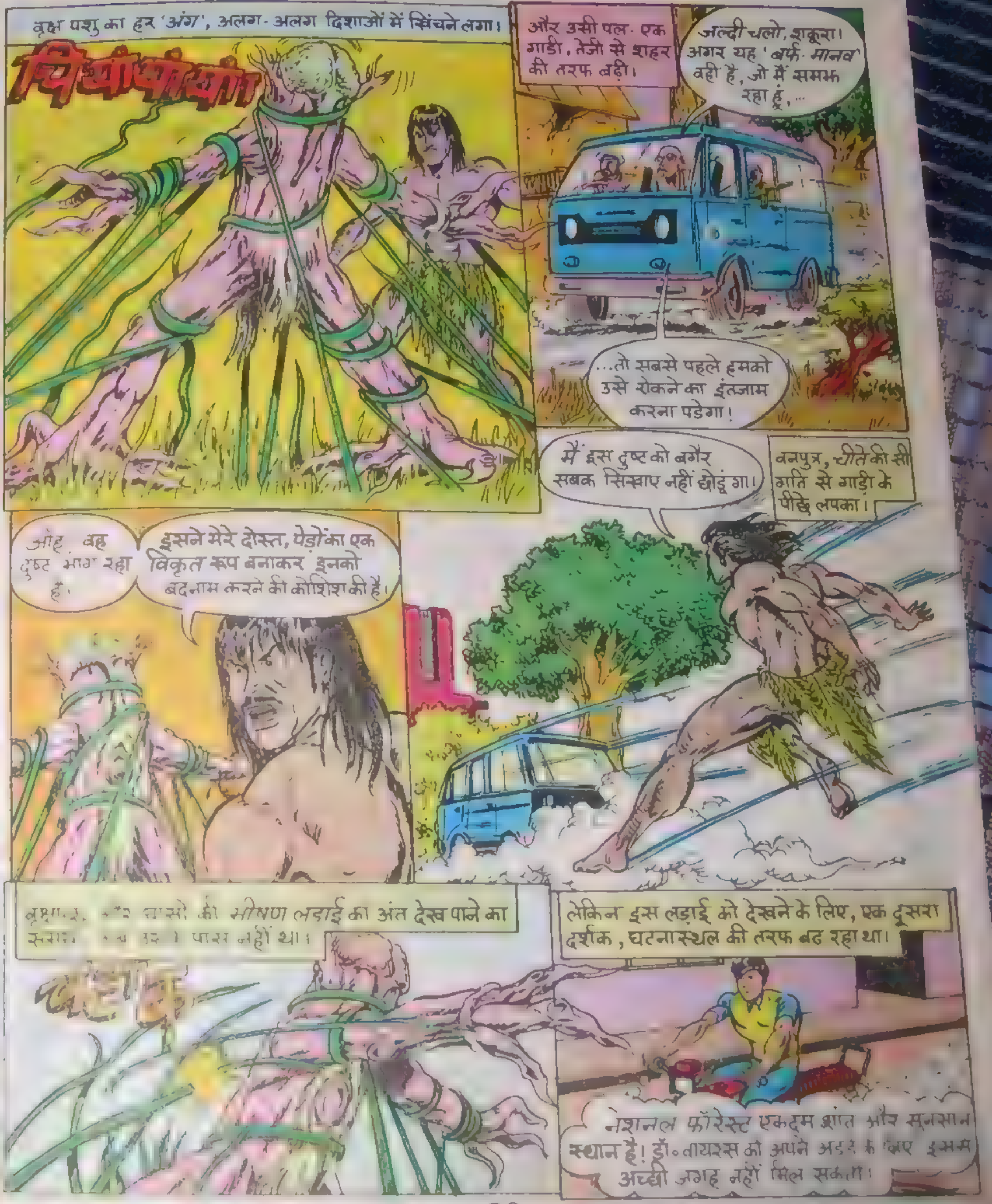
वृक्ष पशु का हर 'अंग', अलग-अलग दिशाओं में खिंचने लगा।
चियांयांयां
और उसी पल-एक गाड़ी, तेजी से शहर की तरफ बढ़ी।
जल्दी चलो, शकूरा! अगर यह 'बर्फ-मानव' वही है, जो मैं समझ रहा हूं,...
...तो सबसे पहले हमको उसे रोकने का इंतजाम करना पड़ेगा।
मैं इस दुष्ट को बगैर सबक सिखाए नहीं छोड़ूंगा।
वनपुत्र, चीते की सी गति से गाड़ी के पीछे लपका।
ओह, वह दुष्ट भाग रहा है।
इसने मेरे दोस्त, पेड़ों का एक विकृत रूप बनाकर इनको बदनाम करने की कोशिश की है।
लेकिन इस लड़ाई को देखने के लिए, एक दूसरा दर्शक, घटनास्थल की तरफ बढ़ रहा था।
नेशनल फॉरेस्ट एकदम शांत और सुनसान स्थान है! डॉ॰ वायरस को अपने अड्डे के लिए इससे अच्छी जगह नहीं मिल सकती।

देखने से ही एक अत्याधुनिक लेबोरेट्री लग रही है।
जमीन पर एक कार के आने और जाने के निशान बने हुए हैं।
और इन निशानों के साथ-साथ, एक मोटी टायरों के निशान भी हैं।
पर यह टूट फूट कैसे गई है?
पर कौन?
की विचारधारा को भंग कर दिया।
लेबोरेट्री का एक हिस्सा और ध्वस्त हो गया था
?

वृक्षपशु ने अपनी जड को लबा
और उसके सहारे, उसका पूरा शरीर लट्टू की तरह नाचने लगा।
कुछ ही पलों में, लड़ाई का फैसला हो गया।
कुछ घास के तिनके जड से उखड गए। और जो कमजोर थे, वे टूट गए।
वृक्षपशु कुछ देर तक भ्रमित सा खडा रहा।
वह अपने स्वामी के आदेश की प्रतीक्षा कर रहा था।
लेकिन आदेश देने वाला वहां पर था ही नहीं।
पर मैं इतना जरूर समझ रहा हूं, कि यह अगर राजनगर पहुंच गया, तो फिर राजनगर की खैर नहीं है।
यह तो मुझे नहीं मालूम, कि यह क्या चीज है!
ध्रुव वृक्षपशु की तरफ लपका।

और उसका शरीर, गोली की तरह वृक्षपशु के तने से आ टकराया।
वृक्षपशु लड़खड़ाया तक नहीं!
धड़ाक
बल्कि, ध्रुव के जमीन तक वापस पहुंच पाने से पहले ही, लकड़ी की एक सख्त शाखा, उसके बदन से आ टकराई।
ताड़
इस भयानक जीव पर, मेरे वारों का असर नहीं होगा। इस पर वार करने के लिए मुझे एक भारी हथियार की जरूरत है!
ध्रुव ने मोटरसाइकल को स्टार्ट करके, वृक्षपशु से विपरीत दिशा में मोड़ दिया।
पलभर के लिए वृक्षपशु को ऐसा लगा मानो ध्रुव उससे डरकर भाग रहा है।
पर कुछ दूर जाकर, ध्रुव ने मोटर-साइकल को वापस मोड़ा।
उसका हाथ एक्सलेटर पर पूरा घूम गया।

और मोटरसाइकल, एक मिसाइल की सी रफ्तार से वृक्षपशु से आ टकराई।
हिंयांआं
वृक्षपशु यह वार नहीं झेल पाया।
धड़ाक
उसका पूरा 'शरीर' लड़खड़ा कर नीचे आ गिरा।
इस भीषण टक्कर से मोटरसाइकल की टंकी भी टूट कर, चूने लगी।
पेट्रोल ने बहकर वृक्ष-पशु के पूरे तने को भिगो दिया।
किस्मत ने ध्रुव को एक अच्छा मौका दे दिया था।
उसने एक तेज झटके से मोटरसाइकल का स्पार्क प्लग खींच लिया।
एक 'किक' लगते ही, 'स्पार्क प्लग' से कई चिंगारियां निकलकर, वृक्षपशु के पेट्रोल से तर तने पर आ गिरीं।

देखते ही देखते, वृक्षपशु का शरीर, शोलों में घिर गया।
हह!
ध्रुव ने जीत की खुशी में, एक लंबी सांस खींची।
पर तभी - वृक्षपशु के माथे से एक लिसलिसे द्रव की धार फूट निकली।
और उसके तनेरूपी शरीर पर दौड़ रही, आग की लपटें, शांत होने लगीं।
वृक्षपशु एक बार फिर, ध्रुव की तरफ बढ़ा।
और इसबार ध्रुव उसके शिकंजे में फंस ही गया।
हालांकि मोटरसाइकल की टक्कर से वृक्षपशु का तना काफी क्षतिग्रस्त हो गया था, पर उसकी अमानवीय ताकत में कोई कमी नहीं आई थी।

हम तुमको कोई नुकसान नहीं पहुंचाएंगे।
क्योंकि तुम्हारे रहने से हमको कोई नुकसान नहीं पहुंचेगा!
क क्या मतलब?
बाहर चलो!
कुछ ही मिनटों बाद - जब एक कार, डॉ० वर्गीस के घर से बाहर निकली, तो किसी ने भी उस पर ध्यान नहीं दिया।
अब तो मुझे और भी ज्यादा पैसे की जरूरत है।
पर डॉ० वायरस, अगर इस वक्त, ध्रुव की हालत देख सकता, तो वह ध्रुव की चिंता करना छोड़ देता।
क्योंकि ध्रुव की जिंदगी की कहानी अब खत्म होने ही वाली थी।
जिस वृक्ष-पशु में, यूकिलिप्टस को जड़ से उखाड़ देने की ताकत थी, उस की पकड़ से बिना मरे छूट पाना असंभव था।
ध्रुव, खुद भी बचने की उम्मीद छोड़ चुका था।
कि तभी - उसकी आंखों के आगे, आशा की एक किरण चमक उठी।
यह पतला सा तार कैसा है?

इतना तो स्पष्ट है कि इस पेड को, प्रकृति ने नही बनाया है!
इसको वैज्ञानिक तरीके से पैदा किया गया है! इसको कंट्रोल करने के लिए इसके अंदर यंत्र लगे है। और यह तार उन यंत्रो से ही जुड़ा हुआ है।
तार को तोड़ना इतना आसान नहीं था।
क्योंकि ध्रुव के हाथ और पैर वृक्षपशु के शिकंजों में जकड़े हुए
पर ध्रुव का सिर आजाद था।
बदन के एक ही मोड ने, ध्रुव के
तक पहुंचा दिया।
तार खिंचते ही, 'कंप्यूटर रिसीवर', मृत हो गया।
और ध्रुव आजाद हो गया।
आह! मौत को इतने करीब से मैंने पहले कभी नहीं देखा था। यह भी डॉ॰ वायरस का ही नमूना है।
इन खूंखार प्राणियों के पीछे, डॉ॰ वायरस का जरूर खूनी मकसद है! और वह मकसद पूरा हो पाने से पहले ही, मुझे डॉ॰वायरस तक पहुंचना है
में, वृक्षपशु के 'शरीर' की

लेकिन ध्रुव से पहले कोई और, डॉ॰ वायरस तक पहुंच चुका था।
आहा! आओ! आओ!! मैं तुम्हारा ही इंतजार कर रहा था। मैं जानता था कि तुम मेरे पास जरूर आओगे।
देखो। यह फोटो मैंने कबसे तुम्हारे लिए संभाल कर रखी हुई है।
अब ध्यान से मेरी बात सुनो।
आज 'डायमंड एक्सपोर्ट एसोसिएशन', तीस करोड़ के हीरो का एक शिपमेंट, लंदन भेज रहा है।
हीरों से लदा कंटेनर, राजनगर बंदरगाह पर खड़ा है।
पर वे हीरे, लंदन नहीं, डॉ॰ वायरस के पास पहुंचने चाहिए।
और यह काम तुम करोगे!
ध्रुव के लिए, डॉ॰ वायरस तक पहुंचने के रास्ते, खुलने से पहले ही बंद हो आ रहे थे।
तो यह यंत्र, उस चलते-फिरते पेड के अंदर लगा था, ध्रुव?
यह दरअसल एक छोटा सा कंप्यूटर-चिप्स है! इसमें दिए गए आदेश रिकॉर्ड हो जाते है।
और अब वे रिकॉर्ड नष्ट हो गए है।
इससे अब तुमको कोई मदद नही मिल सकती।
तो अब मै क्या करू? क्या डॉ॰ वायरस तक पहुंचने का अब कोई
रिसर्च सेंटर
पिंप पिंप पिंप
ओह! मेरे 'पोर्टेबल फोन' पर किसी की कॉल आ रही है।
हैलो! ध्रुव हियर!
लड़के, ध्यान से सुनो। मैं सिर्फ एक बार बोलूंगा!
अब से ठीक आधे घंटे बाद, राजनगर डॉकयार्ड में डकैती डाली जाएगी।

क्या मुझे पुलिस को खबर करनी चाहिए?
नहीं! हो सकता है कि ये खबर झूठी हो। फोन करने वाले ने अपना नाम तक नहीं बताया।
पर कुछ भी हो। मुझे तो वहां जाना पड़ेगा।
अगर वहां पर सचमुच कोई गड़बड़ तो पुलिस को मैं वहां से सूचित कर दूंगा
पर खबर गलत नहीं थी।
ओह! फोन कट गया।
एक्सपोर्ट एसोसिएशन
भाग कर आओ!
और यहां से रफूचक्कर हो लो

कुछ ही सेकंडों बाद – दो लुटेरे, हीरों भरा बक्सा लेकर तेजी से कंटेनर के बाहर निकले।
और कार की तरफ लपके।
पर वे वहां तक पहुंच नही पाए।
त
धड़ाक
ड़ाक
अगले ही पल कार के अंदर से, गोलियों की एक बौछार, ध्रुव की तरफ लपकी।
लेकिन झूलते ध्रुव तक
बाकी दोनों बदमाश, हीरों का डिब्बा लेकर भागे।
उनकी ध्रुव से लड़ने की कोई इच्छा नहीं थी।
ताड़

लेकिन ध्रुव का भी उनको भागने देने का कोई इरादा नहीं था।
अब की बार दोनों बदमाश, दुबारा नहीं उठ सके।
धड़ाक
कोई भी बदमाश, यह सोच भी नहीं सकता था,
पूरी लड़ाई एक मिनट भी नहीं चली।
...सिवाय डॉ॰ वायरस के।
तुम्हारा फोन सुनकर, ध्रुव डॉकयार्ड पर जरूर पहुंचेगा। और वहां पर वह अपनी मौत से मिलेगा।
तीस करोड़ के हीरे, और ध्रुव की मौत की खबर, मेरे पास एक साथ ही पहुंचेगी।
ध्रुव ने नजरें उठाईं।
और उसने बर्फ मानव की झलक देखी।
पर लड़ाई खत्म हो चुकी थी और ध्रुव जीत चुका था।
या या फिर एक लड़ाई अभी बाकी थी?
डॉ॰ वायरस के अलावा और कोई नहीं बना सकता। पर तुमने

जवाब में एक ठंडी और सरसराती आवाज गूंजी।
मैं तुमको मारना नहीं चाहता।
मेरे रास्ते से हट जाओ।
तुम आ सकते हो, बर्फ मानव।
लेकिन बगैर इस बक्से के।
अगले ही पल- यह स्पष्ट हो गया कि बर्फ-मानव का इरादा पक्का है।
लेकिन ध्रुव आने वाले खतरे को भांप चुका था।
इसीलिए पहला वार उसके शरीर को नहीं छू सका।
और बर्फ मानव के शरीर पर एक भीषण वार आ लगा।
धड़ाक
यानि मुझे इस बात का खास ख्याल रखना पड़ेगा, कि मैं इसकी पकड़ में न आ पाऊं।
परंतु-

पर तभी ध्रुव का शरीर अपने आप जमीन से ऊपर उठ गया।
और बर्फ का गोला, दीवार से टकराकर टुकड़े टुकड़े हो गया।
कड़ाक
यह काम तो सिर्फ एक आदमी ही कर सकता है!
और वह आदमी है...
वनपुत्र!
हां, ध्रुव। मैं काफी देर से इन दुष्टों के पीछे लगा हुआ था।
तुमको यहां पर देखकर मैं अब तक चुप था।
पर अब मैं इसको सबक सिखा कर ही छोडूंगा।
वनपुत्र के इशारों को सिर्फ धरती के पेड़ पौधे ही नहीं-
बल्कि समुद्री पौधे भी समझते थे।
और धीरे धीरे उनकी गिरफ्त
चटक
कड़क
खास असर नहीं हो रहा था।

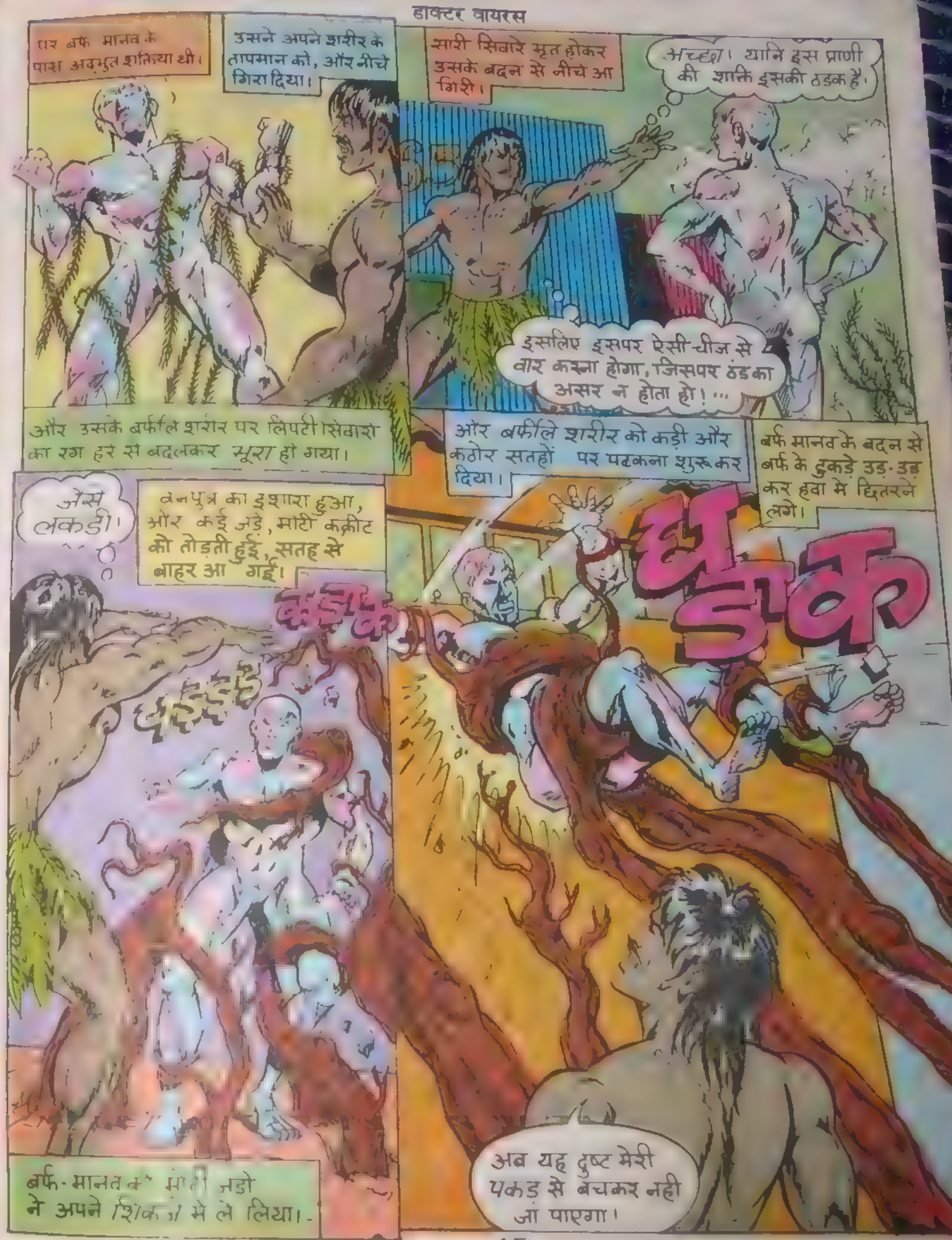
पर बर्फ मानव के पास अद्भुत शक्तियां थी।
उसने अपने शरीर के तापमान को, और नीचे गिरा दिया।
और उसके बर्फीले शरीर पर लिपटी सिवारों का रंग हरे से बदलकर भूरा हो गया।
सारी सिवारें मृत होकर उसके बदन से नीचे आ गिरी।
अच्छा। यानि इस प्राणी की शक्ति इसकी ठंडक है।
इसलिए इसपर ऐसी चीज से वार करना होगा, जिसपर ठंड का असर न होता हो!...
जैसे लकड़ी!
वनपुत्र का इशारा हुआ, और कई जड़ें, मोटी कंक्रीट को तोड़ती हुईं, सतह से बाहर आ गईं।
कड़ाक
ने अपने शिकंजे में ले लिया।
और बर्फीले शरीर को कड़ी और कठोर सतहों पर पटकना शुरू कर दिया।
बर्फ मानव के बदन से बर्फ के टुकड़े उड़-उड़ कर हवा में छितरने लगे।
धड़ाक
अब यह दुष्ट मेरी पकड़ से बचकर नहीं जा पाएगा।

वनपुत्र, अपने दुश्मन को कमजोर समझने की भयंकर भूल कर रहा था।
बर्फ मानव ने अपने शरीर के तापमान को और भी कम कर लिया।
और बर्फ से ढके शरीर पर, बर्फ की और भी पर्तें चढ़ने लगी।
उसका शरीर मोटा होने लगा।
जड़ों के शिकंजे ढीले पड़ने लगे।
और बर्फ मानव, आजाद हो गया।
जड़ें एक बार फिर उसकी तरफ लपकीं।
बर्फ मानव ने, वनपुत्र के दोनों हमलों को बेकार कर दिया था।
?
और अब वह वनपुत्र को कोई भी मौका देने के मूड में नहीं था।
पड़ाक

धुंध-लहर के टकराते ही, वनपुत्र का शरीर बर्फ के एक खोल में कैद हो गया।
और वनपुत्र, अपने सारे होशोहवास खो बैठा।
बर्फ मानव अब हीरो वाले डिब्बे की तरफ बढ़ा।
पर इससे पहले कि उसका हाथ, बॉक्स तक पहुच पाता।
बॉक्स हवा मे उड गया।
ध्रुव ने एक बार फिर लडाई की कमान अपने हाथ मे ले ली थी।
इस बर्फीलि प्राणी की शक्तियां तो कमाल की है।
पर यह जिस तरह का भी प्राणी हो; जिंदा रहने के लिए सांस तो लेता ही होगा।
फटाक
इसलिए मैं इसपर वही अस्त्र आजमाऊगा, जो मैंने किरीगी पर आजमाया था।
नर्व गैस का कैप्सूल!
नर्व गैस ने बर्फ-मानव को घेरा तो जरूर-
लेकिन बर्फीले शरीर तक पहुंचने से पहले ही, नर्व गैस जमकर तरल पदार्थ में बदल गई।

अब क्रुद्ध बर्फ मानव, ध्रुव को भी रास्ते से हटा देने पर उतारू हो गया।
हालांकि ध्रुव इसबार सतर्क था।
पर फिर भी, धुध की लहर उसके कंधे को छूती हुई निकली
बर्र्र्र्र! लग रहा है मै एवरेस्ट पर खडा हूं!
इस प्राणी को रोक पाना असंभव लग रहा है! क्या मुझे जिंदगी में पहली बार हार माननी...
ध्रुव ने अपनी योजना पर अमल, तुरंत शुरू कर दिया।
उसने 13 नं॰ कंटेनर
टूटे दरवाजे के लोहे
के टुकड़ो को उठाय
एक मिनट! एक उपाय तो सूझ रहा है!
क्यों न चलते-चलते इस को भी आजमा लिया जाए?
और कंटेनर के, लोहे के दरवाजे के टुकडे, हवा मे घुमते हुए बर्फ मानव के शरीर से टकराने लगे।
पर नुक्सान रत्ती भर का भी नहीं हुआ।
के सारे टुकडे, बर्फीले शरीर मे
दूर धसकर रुक गए।

अब बर्फ मानव, खतरनाक तरीके से, ध्रुव की तरफ बढ़ा।
ध्रुव अपना वार खाली जाता देखकर तेजी से भागा।
और बर्फ मानव की नजरो से ओझल हो गया।
भाग गया! अच्छा ही हुआ! मै इसे मारना नहीं चाहता था!
और पलभर के लिए हिलना भूल गया।
विद्युत-चुम्बक लगी विशालकाय क्रेन लेकर, ध्रुव उसकी तरफ बढ़ रहा था।
अब मै यह हीरो भरा बॉक्स ले जाकर, डॉ॰ वायरस को सौंप दूं! और उससे अपना हिसाब भी साफ कर...!
घर्र्र्र्र्र्र्र
13
तभी- अपने पीछे एक घरघराहट सुनकर, बर्फ-मानव घूमा।

भीमकाय क्रेन की बॉडी पर, बर्फ मानव के वारों का कोई असर नहीं हो रहा था
बर्फ मानव के कुछ सोच पाने से पहले ही, ध्रुव ने विद्युत चुंबक को चालू कर दिया।
बर्फ मानव के शरीर में धंसे लोहे के टुकड़े, विद्युत चुंबक से आकर्षित होने लगे।
और उनके साथ ही, बर्फ मानव का बदन भी, चुंबक से आ चिपका।
खटाक
चुंबक के सामने बर्फ मानव की सभी शक्तियां बेकार थीं।
अब बताओ, डॉ॰ वायरस के चमचे, कि डॉ॰ वायरस मुझे कहां पर मिलेगा?
सुनो, लड़के, मुझे जाने दो! मैं डॉ॰ वायरस का सहयोगी नहीं हूं।
पर मेरे लिए, इन हीरों को डॉ॰ वायरस तक पहुंचाना बहुत जरूरी है!
ऐसी क्या बात है?
क्योंकि उसने मेरी पत्नी और बेटी का अपहरण कर लिया है मेरा नाम डॉ॰ एम॰ वर्गीस है
प्रसिद्ध जीव वैज्ञानिक डॉ॰ वर्गीस!! आपकी यह हालत कैसे हो गई?
पहले मुझे इस चुंबक से तो छुड़ाओ फिर बताता हूं

डॉ॰ वर्गीस ने, ध्रुव को गुप्त लेबोरेटरी की तबाही तक की कहानी सुना दी।
पर बर्फ में दबकर मैं मरा नहीं। बीटा वायरस के अजीबोगरीब असर ने मुझे जिंदा तो रखा, पर बर्फ मानव के रूप में बदल दिया।
मुझे तो उस वक्त यह भी मालूम नहीं था, कि मैं कितने दिन बेहोश रहा!
लेकिन मुझे इतना पता था कि डॉ॰ वायरस का अड्डा राजनगर में ही कहीं पर है!
होश में आते ही, मैं नदियों के अंदर तैरता, राजनगर तक आ पहुंचा।
जिस वक्त तुम कोढक से लड़ रहे थे, उसी वक्त संयोगवश मैं नहर के रास्ते से गुजर रहा था।
कोढक पर नजर पड़ते ही मैं समझ गया कि यह प्राणी, डॉ॰ वायरस का आदमी है। मैं उसको बेहोश करके अपने साथ ले जाना चाहता था, ताकि उससे डॉ॰ वायरस का पता मालूम कर सकूं।
पर तुम्हारे होश में आ जाने से, और 'हॉस्पिटल स्टाफ' के घटनास्थल पर पहुंच जाने से,
मुझे खाली हाथ भागना पड़ा।
और फिर जब तक मैं डॉ॰ वायरस को ढूंढ पाता, उसने मेरे परिवार का अपहरण कर लिया।
और उनको मारने की धमकी देकर, मुझे इस डकैती के लिए भेज दिया।
ओह! यानि मुझको, डकैती पड़ने की सूचना डॉ॰ वायरस ने ही भेजी थी।
उसको पूरा यकीन होगा, कि आप, मुझे, डॉ॰ वायरस के रास्ते से हटा देंगे।
अब मुझे समझ में आ रहा है, आप तनपुत्र को होश में लाइए।
फिर मैं डॉ॰ वायरस को ठिकाने लगाने की योजना बनाता हूं!
और इसी वक्त-
ये देखो, डिट्टी!
मैंने बीटा वायरस में और सुधार करके 'बीटा वायरस प्लस' बना लिया है!
तुम शकूरा को बुलाओ!
और हां! क्लोरोफार्म तैयार रखना।

लेबोरेटरी से
दूर पर-
मुख्य इमारत के पास, एक नया घटनाक्रम शुरू होने वाला था।
ओफ़! इतनी कड़ी धूप मे पहरेदारी। क्या जिंदगी है?
पसीने की धारे बह रही हैं। इस समय तो हमलोगो को हिल स्टेशन की बर्फीली वादियो मे होना चाहिए था।
अगले ही पल- दोनो पहरेदारो की ईच्छा, राज
मे ही पूरी हो गई।
दुनिया की सबसे अजीबोगरीब टीम, अपना कमाल दिखाने आ चुकी थी।
ये दोनो तो गए।
मेरी पत्नी और बेटी उस कमरे मे कैद है! पर वहां तक पहुचा कैसे जाए?
वह तुम मुझपर छोड़ दो!
बनपुत्र का आदेश पाकर, एक बेल तेजी से दीवार पर चढने लगी।
खिडकी तक पहुचकर, बेल सलाखो पर लिपटी।
और पूरी खिडकी, दीवार से अलग हो गई।
मम्मी!

और देखते ही देखते- बेल ने दोनों को अपनी गिरफ्त मे लेकर, उनको सुरक्षित खिड़की के बाहर खीच लिया।
लेकिन इसी वक्त- डॉ॰ वायरस अपने डिप्टी के साथ, लैब से बाहर निकल आया।
बेचारा शकूरा, क्लोरोफॉर्म सूघते ही चित्त हो गया! उसको तो 'बीटा वायरस प्लस' के इन्जेक्शन का दर्द तक महसूस नही हुआ होगा।
पर मेरा प्रयोग कामयाब रहा। शकूरा अब वही बन गया है, जो मै चाहता था!
अब मुझे इस वायरस का उत्पादन बड़े पैमाने पर करना है! ..
और ऐसे कम से कम पांच हजार प्राणियो की फौज...।
डॉ॰ वायरस बोलते-बोलते चुप हो गया।
क्योकि उसके सामने बर्फ मानव के साथ, ध्रुव खड़ा था।
ओहो! तो तुम आ गए!
और ध्रुव को भी साथ ले आए!
पर वे हीरे कहा है?
बर्फ मानव मुझे लेकर नही आया है, डॉ॰ वायरस! बल्कि मै इसको लेकर आया हूं!
और तुम्हारे हीरे..
.. इधर है!
य यह तो वही जगली है। और इसके साथ मेरे दोनो कैदी हैं!!
यानि तेरा खेल खत्म हो गया है, दुष्ट।

गोलियां चलीं तो जरूर!
पर अपने निशानो तक
पहले, एक बर्फ की दीवार
डिप्टी के हाथो से छिन गई।
और एक भीषण मुक्के ने उसको, बेहोशी
पर तभी- डॉ॰ वायरस
शक्करा एटैक!!

और अगले ही पल- लेबोरेट्री की दीवार को तोड़ती हुई, जो आकृति बाहर निकली-
उसे देखकर यह कहना मुश्किल था, कि वह वृक्ष है या मानव, या फिर-
वृक्षमानव!
रुको, बर्फ मानव
यह जो कुछ भी है, इस समय पेड़ के रूप में है। और इस रूप में इसको वनपुत्र का
ओह! अपने बीटा वायरस का इतना घातक उपयोग, तो मैं सोच भी नहीं सकता था।
और अगले ही पल- वनपुत्र के सिर पर एक धमाका हुआ।
इससे तुम लोग जीत नही सकते। इसपर तुम्हारी शक्तिया बेअसर है।
लेकिन वनपुत्र के आदेश का वृक्षमानव पर कोई असर नही पड़ा।

कभी नहीं!
इसको तो मैं रोकूंगा!
वृक्षमानव के 'पैरों' को बर्फ ने धरती में जमा दिया।
लेकिन यह बंधन, वृक्षमानव को रोकने के लिए काफी नहीं था।
कड़ाक
अब बर्फमानव ने अपने शरीर के तापमान को और नीचे गिरा दिया।
और वृक्षमानव का पूरा शरीर, बर्फ की तहों में लिपटने लगा।
बर्फ-मानव को पूरा यकीन था, कि उसका यह वार खाली नहीं जाएगा।
पर ऐसा हुआ नहीं।
यह क्या? यह नहीं हो सकता!
मेरी बर्फ-कैद को कोई भी नहीं तोड़ सकता!
यह भी उसी 'बीटा वायरस' की पैदाइश है, जिसने तुमको बर्फ-मानव बनाया है।
इसीलिए तुम्हारे किसी भी वार का इसपर असर नहीं होगा! पर तुम पर इस के वारों का असर होगा या नहीं

..यह कह पाना मुश्किल है!
वृक्ष मानव की भुजाएं, बर्फ-मानव पर आकर कस गई।
और उसका शरीर कसने लगा।
पकड़ बहुत जबर्दस्त थी।
बर्फ-मानव को अब अपना शरीर, अंदर से कड़कड़ाता हुआ, महसूस हो रहा था।
कड़ पड़ाक
कि तभी- उड़ता हुआ एक शरीर, वृक्षमानव के पैरों से आ टकराया।
और वृक्ष मानव, अपना संतुलन खोकर, जमीन पर आ गिरा।
और उसी पल- बेशुमार लताओं और झाड़ियों ने, उसके शरीर को जमीन से बांध दिया।
वनपुत्र, होश में आ चुका था।

और उसकी आश्चर्यचकित आंखों के सामने, एक हल्के से झटके से, सभी बंधनों की जड़ें जमीन से बाहर आ गईं।
चट
चटाक
ओह! इसने तो मेरे सभी वारों को बेकार कर दिया है!
ये आग उगलने वाला हथियार!
यह इसको जरूर खत्म कर देगा।
वनपुत्र ने, शिकारियों को बंदूक चलाते तो कई बार देखा था।-
पर वह, खुद आज पहली बार गोलियां दाग रहा था।
और उसका यह पहला प्रयास ही बेकार साबित हुआ।
तड़तड़तड़
?
सारी गोलियां, कड़े तने में धंसकर, बेकार हो गईं।
हाहा हाहा! मूर्खो! मेरे वृक्षमानव पर तो बम और मिसाइलें भी बेकार हैं।
इन छोटी-मोटी गोलियों से तो इसको खरोंच तक नहीं लगेगी।
पर अब ये तुम लोगों को जिंदा नहीं छोड़ेगा।
अगर इसपर 'अल्ट्रावायलेट किरणें' डाली जाएं, तो वे बीटा वायरस को नष्ट कर देंगी।
और यह अपने असली रूप में आ जाएगा।
नहीं, ध्रुव! मेरे बीटा वायरस पर अल्ट्रावायलेट किरणें बेअसर हैं!

ऐसे तो यह सचमुच हम सबकी मौत बन जाएगा!
अब हमको अपनी सम्मिलित शक्ति लगानी होगी!
पर अब हम क्या कर सकते हैं?
वनपुत्र, जिस तरह से मनुष्यों और पशुओं की रगों में खून बहता है, उसी तरह पेड़-पौधों की नलिकाओं में पानी बहता है!
अगर किसी तरह से इसके 'शरीर' से यह पानी बाहर निकाल दिया जाए, तो यह बेदम हो जाएगा।
पानी बाहर कैसे निकलेगा?
देखो, वनपुत्र! ये सरकंडे की झाड़ियां! ये पानी को भी सोखती हैं!...
...और तुम्हारा आदेश भी मानती हैं!
मैं समझ गया, ध्रुव!
अब तुम देखो!
वनपुत्र का इशारा पाते ही, सरकंडे की नलियां और भी लंबी होकर...
...जड़ों के रास्ते, वृक्षमानव के तने जैसे शरीर में, प्रविष्ट हो गईं-
और पानी चूसने लगी।

वृक्षमानव कराहकर, तेजी से दूर भागा।
पर सरकंडे भी साथ ही साथ, लंबे होते गए।
और कुछ ही मिनटों में- सरकंडों ने- वृक्षमानव के शरीर का सारा पानी सोख लिया।
वह लड़खड़ा कर जमीन पर आ गिरा।
पर अब भी, उसमें थोड़ी सी जान बाकी थी।
अरे! यह, उस फव्वारे की तरफ बढ़ रहा है! पानी के लिए!
अगर इसके शरीर में, पानी दोबारा पहुंच गया, तो फिर हमारी जानें नहीं बचेंगी!
बर्फ-मानव!
ध्रुव का इशारा समझकर, बर्फ-मानव ने अपने शरीर का तापमान, और नीचे गिरा दिया।
उसके हाथों से, धुंध की लहरें निकलीं।

और फव्वारे का पानी जमने लगा।
वृक्षमानव की जड़ें, पानी तक पहुंच पाने से पहले ही, पूरा पानी जम चुका था।
वृक्षमानव ने, अपनी ताकत के आखिरी कतरे का, इस्तेमाल करते हुए, खड़ा होने की कोशिश की।
और वह दुबारा उठने लायक नहीं रहा।
वाह, ध्रुव! तुम्हारी योजना की बदौलत हमने, इस खतरनाक और अजेय प्राणी को भी मात दे दी!
वह तो ठीक है, वनपुत्र! लेकिन डॉ. वायरस किधर गया?
लगता है, कि वह वृक्षमानव की पिटाई देखकर भाग खड़ा हुआ।
वह समझ गया होगा, कि उसका तुरुप का पत्ता भी, तुम्हारे दिमाग के सामने नहीं टिक पाएगा।

लेकिन यह तो बहुत बुरा हुआ। वह बीटा वायरस का रहस्य अपने साथ ही लेता गया है।
और यह पूरी मानवता के लिए विनाशकारी सिद्ध हो सकता है!
नहीं, ध्रुव! ऐसा कुछ नहीं होगा! क्योंकि इस दौरान मैं बीटा वायरस की काट भी ढूंढ़ लूंगा।
आखिर मुझे भी तो अपने असली रूप में वापस आना है!
और इस बेचारे शकूरा को भी, डॉ॰ वायरस के चंगुल से आजाद कराना है!
ध्रुव की जिंदगी का एक और अभियान सफलता पर खत्म हुआ था।
पर उसके जानी दुश्मनों में एक नया नाम जुड़ गया था— डॉ॰ वायरस!
इस छोकरे ध्रुव ने मेरे सारे सपने चकनाचूर कर दिए। मेरी वायरल फौज को खत्म कर दिया। मैं बदला लूंगा! जरूर लूंगा।
और वह प्रतिशोध इतना खतरनाक होगा, कि पूरी दुनिया कांप उठेगी।
समाप्त

ज कॉमिक्स पेश करते हैं तीन शानदार कॉमिक्स
डोगा सीरीज का गुर्राता कॉमिक्स
अब तक प्रकाशित डोगा के कॉमिक्स
कर्फ्यू
ये है डोगा
मैं हूं डोगा
अश्वराज सीरीज का हिनहिनाता कॉमिक्स
अब तक प्रकाशित अश्वराज के कॉमिक्स
अश्वराज
कारूं का खजाना
अश्वमणि
तिलिस्म का खिलाड़ी
फिर आया अश्वराज
प्रलयंकारी अश्वराज
खूनबून्द
गोजो सीरीज का गुजगुजाता कॉमिक्स
अब तक प्रकाशित गोजो के कॉमिक्स
गोजो
बिजलिका